उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:39 | देहरादून, बुधवार, 02 मार्च, 2022 | पृष्ठ:08

बढ़ते तापमान में सब्जियों की संरक्षित खेती में निरंतर करते रहे सिंचाई: डॉ राजीव

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शाक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है।

संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे तथा बीच–बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19 :19 का 1.5 से 2% घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा–भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा यदि सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं।

डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला, तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट वर्मीकुलाईट एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते है तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है।

खीरा की पार्थेनोकार्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा–6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

22 10:36 PM Page 1

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 13 अंक: 240 कानपुर, गुरुवार 03 मार्च, 2022 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपये

राष्ट्रीय स्वरूप

yaswaroop.in

पिछली दो पारियों ने मुझे आत्मविश्वास दिया : हरमनप्रीत 10

अस्पताल में भर्ती कराया गया था लक्ष्मन दुबे (32) नौबस्ता के आनंद विहार का रहने वाला था। यह केस्को में संविदा पर था। करंट की चपेट में आने से वह गंभीर रूप से झुलस गया था। उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था। ठेकेदारों मुताबिक मरने से पहले लाइनमैन ने अपने अधिकारियों को अपनी मौत के लिए जिम्मेदार ठहराया था।

करने से एक बात तो साफ हो गई है कि वह भी कहीं न कहीं इस भ्रष्टाचार में पूर्ण रूप से शामिल है। वहीं केडीए के सचिव शत्रोहन वैश्य ने बताया कि उक्त कार्यदायी संस्था को नोटिस जारी कर दिया गया है, लेकिन उसने कोई अभी तक कोई जवाब नहीं दिया

गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती में होती हैं, समसामयिक क्रियाएं

कानपुर। सीएसए के शाक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे शाकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19:19 का 1.5 से 2ग्रा प्रति लीटर का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पद्धति के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तोरई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाइट, एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। खीरा की पार्थेनोकार्पिक प्रजाति जैसे पूसा बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश @janexpressnews

पेट्रोल-डीजल! टैक्स में कटौती करके... 12

छठे चरण में सीएम योगी की प्रतिष्ठा का इम्तिहान... 05

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 140
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
लखनऊ | शुक्रवार | 03 मार्च, 2022

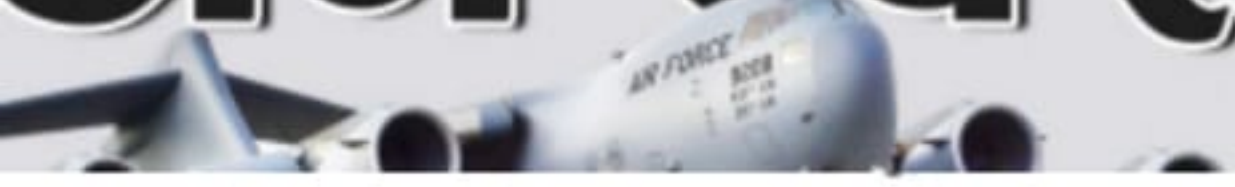

'बढ़ते हुए तापमान से सब्जी-फल फसल पर पड़ेगा प्रभाव'

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित साक भाजी अनुभाग के सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ. राजीव ने बढ़ते तापमान को देखते हुए कहा कि तेजी से बढ़ते हुए तापमान से संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया बाधित हो सकती है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान इस प्रकार निरंतर सिंचाई करते रहे जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। उन्होंने बताया कि एन.पी.के. 19:19:19 का 1.5 से 2 फीसदी घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। जिससे पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। डॉ.राजीव ने कहा कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्द्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं।तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है।जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

महानगर आज

कानपुर

3 मार्च 2022

4

संरक्षित खेती में उगायें टमाटर एवं शिमला मिर्च

गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती किसानों के लिए लाभप्रद

कानपुर, 2 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक-भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव कुमार ने कहाकि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे, जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. का 1.5 से 2 प्रतिशत घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट,एवं परलाइट का अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्द्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं।तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है।जिसमें उज्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है।खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा-6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

वर्ष 16 अंक 61 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, गुरूवार 03 मार्च 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com पेज -8

'अगर तुम न होते' में अंगद का निगेटिव किरदार निभाएंगे

गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती में समसामयिक क्रियाएं

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19¬19 ¬19 का 1.5 से 2ग्रा घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट,एवं परलाइट का 3¬1¬1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।